

राजस्थान में पेचिश रोग के लक्षण और उपचार: एक अध्ययन

डॉ. महेश कुमार बबेरवाल, एसोसिएट प्रोफेसर भूगोल, एसएनकेपी राजकीय महाविद्यालय नीम का थाना

सार

पेचिश रोग एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या है जो शराबदार पानी के सेवन से होती है। यह रोग खासकर मौसमी बदलावों के समय ज्यादा प्रभावी होता है। इसके मुख्य कारण में विषाक्त पानी में उच्च कार्बनिक एसिड होता है, जो रोग का प्रमुख कारक होता है।

मुख्य लक्षण:

- दर्द और अलसी: पेचिश रोग के प्रमुख लक्षण में पेट में दर्द और अलसी की अवस्था होती है। यह अक्सर गंभीर होती है और व्यक्ति को बहुत असहनीय बना सकती है।
- जलन: पेचिश रोग के संकेत में पेट में जलन की समस्या भी हो सकती है, जो अस्वाभाविक हो सकती है।
- उल्टी: अक्सर इस रोग के प्रकोप के समय उल्टी की समस्या भी हो सकती है।

इस रोग के इलाज में सावधानी बरतना जरूरी है। इलाज में विशेषज्ञ चिकित्सक की सलाह लेना अत्यंत महत्वपूर्ण है ताकि रोगी को सही दवाइयाँ और समय-रहित देखभाल प्राप्त हो सके।

रोग होने के कारण

पेचिश रोग के होने के मुख्य कारण शराबदार पानी के सेवन से होते हैं, जिसमें विषाक्त पानी में उच्च कार्बनिक एसिड होता है। यह एसिड रोग के प्रमुख कारक के रूप में कार्य करता है और पेट की समस्याओं का कारण बन सकता है। इस रोग के कारण और विवरण निम्नलिखित हैं:

विषाक्त पानी: पेचिश रोग का मुख्य कारण विषाक्त पानी है, जिसमें उच्च कार्बनिक एसिड मौजूद होता है। यह पानी बारिश के समय या बारिश के बाद विशेषतः जलवायु बदलने के समय विषाक्त हो सकता है। विषाक्त पानी एक सामान्य शब्द है जिसका अर्थ होता है पानी जो किसी प्रकार के विषाणु, जैविक या अन्य जहरीले तत्वों से प्रभावित हो गया है। यह जलवायु बदलाव, जैविक उत्पादों का उपयोग, और अन्य कारणों से हो सकता है। विषाक्त पानी के सेवन से होने वाली स्वास्थ्य समस्याएं और रोग बहुत हानिकारक हो सकते हैं, जैसे कि पेचिश रोग जो शराबदार पानी के सेवन से होता है।

प्राकृतिक प्रक्रिया: अधिक गर्मी और भीषण तापमान के कारण भी पेचिश रोग का प्रकोप हो सकता है। यह मौसमी बदलावों और जलवायु परिवर्तन के दौरान अधिक देखा जाता है। प्राकृतिक प्रक्रिया एक विशेष तरीके से विवरण की जाती है जो प्राकृतिक परिवर्तनों या घटनाओं से संबंधित होती है। यह विभिन्न प्रकार की जलवायु, भूमिकर्म, और प्राकृतिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करती है जो पृथ्वी पर विभिन्न जीवन प्रक्रियाओं को प्रभावित करती हैं।

जब हम पेचिश रोग जैसी स्वास्थ्य समस्याओं के प्रकोप की प्राकृतिक प्रक्रिया के बारे में बात करते हैं, तो इसमें मौसमी बदलाव, भूमिकर्म, और जलवायु परिवर्तन का विशेष महत्व होता है। उच्च तापमान और भीषण गर्मी के मौसम में उपर्युक्त तत्वों का प्रभाव हो सकता है, जो पानी में

विषाणुओं और अन्य हानिकारक तत्वों की वृद्धि को बढ़ा सकते हैं। इस प्रक्रिया में भूमिकर्म भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह भूमि से विभिन्न रासायनिक पदार्थों को पानी में लेकर आता है और उनके सेवन से रोग के प्रकोप का कारण बन सकता है।

भूगर्भिक कारण: कुछ क्षेत्रों में भूगर्भिक तरीके से एसिडिक पानी का असर हो सकता है, जो पानी में कार्बनिक एसिड की मात्रा बढ़ा सकता है। यह भी रोग के प्रकोप का कारण बन सकता है। भूगर्भिक कारण वह प्रकार का कारण होता है जो भूमि के निचले भागों में होता है और जिससे पानी में विभिन्न रासायनिक पदार्थों का आना होता है। इसका उदाहरण भूजल संक्रमण और उससे प्राप्त रासायनिक तत्वों की मात्रा बढ़ जाती है, जिनमें उच्च कार्बनिक एसिड भी शामिल हो सकता है। यह भूमिकर्म प्राकृतिक प्रक्रियाओं का हिस्सा होता है और इससे पेचिश रोग का प्रकोप हो सकता है।

सामाजिक परिवेश: कुछ सामाजिक परिवेश में लोगों की शराबदार पानी के सेवन की प्रथा हो सकती है, जिससे इस तरह की बीमारी का खतरा बढ़ सकता है। सामाजिक परिवेश एक महत्वपूर्ण कारक हो सकता है जो पेचिश रोग जैसी स्वास्थ्य समस्याओं के प्रकोप में योगदान करता है। यहां कुछ संभावित सामाजिक परिवेश से संबंधित कारकों की चर्चा की गई है:

1. **जलसंवर्धन और साफ़ पानी की उपलब्धता:** अगर किसी क्षेत्र में पानी की स्वच्छता और उपलब्धता की स्थिति अच्छी नहीं है, तो लोग अप्रत्याशित स्रोतों से पानी पी सकते हैं, जिसमें विषाणु और अन्य हानिकारक पदार्थ हो सकते हैं। इससे उन्हें पेचिश रोग जैसी बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है।
2. **सामाजिक सद्भाव:** कुछ समाजों में पानी के स्रोतों की एकीकृतता और साझेदारी की परंपरा होती है, जो स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता को बढ़ा सकती है। इससे ऐसे समाजों में पेचिश रोग जैसी बीमारियों का प्रकोप कम हो सकता है।
3. **स्वास्थ्य सेवा की उपलब्धता:** अगर किसी क्षेत्र में सामाजिक संरचना में स्वास्थ्य सेवा की अच्छी उपलब्धता है, तो लोगों को जानकारी मिलती है कि ऐसे रोगों का सही समय पर पहचान और इलाज कराना कितना महत्वपूर्ण होता है। इससे समुदाय में रोगों के प्रति जागरूकता बढ़ सकती है और रोग प्रकोप को नियंत्रित किया जा सकता है।

इन सामाजिक परिवेश से संबंधित कारकों के माध्यम से पेचिश रोग जैसी बीमारियों के प्रकोप को नियंत्रित किया जा सकता है और सामुदायिक स्वास्थ्य को सुधारा जा सकता है।

इन कारणों से पेचिश रोग का प्रकोप होता है, जो लोगों को पेट की समस्याओं से जूझने का सामना करवा सकता है। इसलिए अपने पानी के स्रोत को ध्यान में रखना और स्वच्छता का पालन करना बहुत महत्वपूर्ण होता है।

निष्कर्ष

पेचिश रोग का निष्कर्ष यह है कि यह एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या होती है जो शराबदार पानी के सेवन से होती है। इसमें पेट में दर्द और अलसी की समस्या होती है, जो संक्रमण के कारण होती है। समय रहते इलाज कराना इस बीमारी के उपचार में महत्वपूर्ण होता है ताकि यह गंभीर समस्याओं से बचाव किया जा सके।

संदर्भ

[1]. H.H., Kyu, C. Pinho, J.A. Wagner, J.C. Brown, A. Bertozzi-Villa et al., “Global and national burden of diseases and injuries among children and adolescents between 1990 and 2013: findings from the global burden of disease 2013 study”, Global Burden of Disease Pediatrics Collaboration, JAMA Pediatrics, Vol. 170, pp. 267–287, 2016.

[2]. WHO, “<http://www.who.int/en/news-room/factsheets/detail/diarrhoeal-disease>”, 2017.

- [3]. WHO, “The Global Burden of Disease: 2004 Update”, Geneva, 2008.
- [4]. United Nations Children’s Fund. “Diarrhoea: why children are still dying and what can be done”, New York, NY: United Nations Children’s Fund, p. 58, 2009.
- [5]. NFHS-4, “http://rchiips.org/NFHS/pdf/NFHS4/RJ_FactSheet.pdf”, 2015-16.
- [6]. J.P. Nataro, J.B. Kaper, “Diarrheagenic *Escherichia coli*”, *Clinical Microbiology Reviews*, Vol. 11, pp.142–201, 1998.
- [7]. Census India, “censusindia.gov.in/2011census/dchb/0803_PART_B_DCHB_BIKANER.pdf”, 2011.
- [8]. J.B. Kaper, J.P. Nataro, H.L.T. Mobley, “Pathogenic *Escherichia coli*”, *Nature Review Microbiology*, Vol. 2, issue 2, pp.123–140, 2004.
- [9]. M.A., Croxen, R.J. Law, R. Scholz, K.M. Keeney, M. Wlodarska, B.B. Finlay, “Recent advances in understanding entericpathogenic *Escherichia coli*”. *Clinical Microbiology Review*, Vol. 26, issue 4, pp. 822–880, 2013.
- [10]. A.G. Abreu, C.M. Abe, K.O. Nunes et al., “The serine protease Picas a virulence factor of atypical enteropathogenic *Escherichia coli*”, *Gut Microbes*, Vol. 7, issue 2, pp. 115–125, 2016.
- [11]. T.A.T. Gomes, “Typical and atypical enteropathogenic *Escherichia coli*”, *Emerging Infectious Disease*, Vol. 8, pp. 508–513, 2002.
- [12]. J.P. Nataro, J.B. Kaper, “Diarrheagenic *Escherichia coli*”, *Clinical Microbiology Reviews*, Vol. 11, pp. 142–201, 1998.
- [13]. D. Vijay, P. Dhaka, J. Vergis, M. Negi, V. Mohan, M. Kumar et al., “Characterization and biofilm forming ability of diarrhoeagenic enteroaggregative *Escherichia coli* isolates recovered from human infants and young animals”, *Comparative Immunology, Microbiology & Infectious Diseases*, Vol. 38, pp. 21-31, 2015.
- [14]. A. von Mentzer, T.R. Connor, L.H. Wieler et al., “Identification of enterotoxigenic *Escherichia coli* (ETEC) clades with long-term global distribution”, *Nature Genetics*, Vol. 46, pp.1321–1326, 2014.
- [15]. A. von Mentzer, Thesis “Whole Genome Sequencing of Enterotoxigenic *Escherichia coli* (ETEC): Identification of ETEC Lineages and Novel Colonization Factors”. Gothenburg, Sweden: Department of Microbiology and Immunology, Institute of Biomedicine, Sahlgrenska Academy at University of Gothenburg, 2016.

Date of Publication: 31-03-2024